## ॥ रुद्रपद्पाठः ॥

ॐ। गणानांम्। त्वा। गुणपंतिमितिं गुण-पतिम्। हवामहे। कविम्। कवीनाम्। उपमश्रंवस्तममित्युंपमश्रंवः-तमम्॥ ज्येष्ठराजमितिं ज्येष्ठ-राजम्ं। ब्रह्मणाम्। ब्रह्मणः। पर्ते। एतिं। नः। शृण्वन्। ऊतिभिरित्यूति-भिः। सीद्। सादंनम्॥ नर्मः। ते। रुद्र। मन्यवैं। उतो इतिं। ते। इषेवे। नर्मः॥ नर्मः। ते। अस्तु। धन्वंने। बाहुभ्यामितिं बाहु-भ्याम्। उता ते। नमंः॥ या। ते। इषुंः। शिवतमेतिं शिव-तमा। शिवम्। बभूवं। ते। धर्नुः॥ शिवा। शरव्यां। या। तवं। तयाँ। नः। रुद्रा मृडयु॥ या। ते। रुद्रा शिवा। तुन्ः। अघोरा। अपापकाशिनीत्यपाप-काशिनी॥ तयाँ। नः। तनुवाँ। शन्तंम्येति शम्-तम्या। गिरिशन्तेति गिरि-शन्त। अभीति। चाकशीहि॥ याम्। इषुम्ं। गिरिशन्तेतिं गिरि-शन्त। हस्तें। (१)

बिर्भर्षि। अस्तंवे॥ शिवाम्। गिरित्रेतिं गिरि-त्र। ताम्। कुरु। मा। हिर्सीः। पुरुषम्। जगंत्॥ शिवेनं। वचंसा। त्वा। गिरिश। अच्छां। वृदामसि॥ यथां। नः। सर्वम्ं। इत्। जगंत्। अयुक्ष्मम्। सुमना इति सु-मनाः। असंत्॥ अधीति। अवोचत्। अधिवक्तेत्यंधि-वक्ता। प्रथमः। दैव्यः। भिषक्॥ अहीन्। च। सर्वान्। जम्भयन्। सर्वाः। च। यातुधान्यं इति यातु-धान्यः॥ असौ। यः। ताम्रः। अरुणः। उत। बभुः। सुमङ्गल इति सु-मङ्गलः॥ ये। च। इमाम्। रुद्राः। अभितः। दिक्षु। (२)

श्रिताः। सहस्रश इति सहस्र-शः। अवेति। एषाम्। हेर्डः। ईमहे॥ असौ। यः। अवसर्पतीत्यंव-सर्पति। नीलंग्रीव इति नीलं-ग्रीवः। विलोहित इति वि-लोहितः॥ उता एन्म्। गोपा इति गो-पाः। अदृश्न्। अदंशन्। उदृहार्यं इत्यंद-हार्यः॥ उता एन्म्। विश्वां। भूतानिं। सः। दृष्टः। मृहुयाति। नः॥ नमंः। अस्तु। नीलंग्रीवायेति नीलं-ग्रीवाय। सहस्राक्षायेति सहस्र-अक्षायं। मीदुषें॥ अथो इतिं। ये। अस्य। सत्वांनः। अहम्। तेभ्यः। अक्रम्। नमंः॥ प्रेतिं। मुश्र्। धन्वंनः। त्वम्। उभयोः। आर्तियोः। ज्याम्॥ याः। च। ते। हस्तें। इषंवः। (३)

परेति। ताः। भगव इति भग-वः। वपः॥ अवतत्येत्यंव-तत्यं। धर्नुः। त्वम्। सहस्राक्षेति सहस्र-अक्षः। शतेषुध इति शतं- इषुधे॥ निशीर्येतिं नि-शीर्यं। शल्यानांम्। मुखां। शिवः। नः। सुमना इति सु-मनौः। भुव्॥ विज्यमिति वि-ज्युम्। धनुः। कपर्दिनंः। विशंल्य इति वि-शल्यः। बाणवानिति बाणं-वान्। उत॥ अनेशन्। अस्य। इषंवः। आभुः। अस्य। निषङ्गर्थिः॥ या। ते। हेतिः। मीढुष्टमेतिं मीढुः-तम। हस्तें। बभूवं। ते। धनुंः॥ तयाँ। अस्मान्। विश्वतंः। त्वम्। अयक्ष्मयाँ। परीतिं। भुज्॥ नर्मः। ते। अस्तु। आयुंधाय। अनांततायेत्यनां-तृताय। धृष्णवे॥ उभाभ्याम्। उता ते। नमः। बाहुभ्यामिति बाहु-भ्याम्। तर्व। धन्वने॥ परीति। ते। धन्वनः। हेतिः। अस्मान्। वृण्क्ता विश्वतंः॥ अथो इतिं। यः। इषुधिरितींषु-धिः। तवं। आरे। अस्मत्। नीतिं। धेहि। तम्॥ (४) नमंः। हिरंण्यबाहव इति हिरंण्य-बाहवे। सेनान्यं इतिं सेना-न्यें। दिशाम्। च। पतये। नर्मः। नर्मः। वृक्षेभ्यः। हरिकेशेभ्य इति हरि-केशेभ्यः। पुशूनाम्। पत्ये। नर्मः।

नमः। हिरण्यबाहव इति हिरण्य-बाहुवे। सेनान्यं इति सेना-न्यें। दिशाम्। च। पत्ये। नमः। नमः। वृक्षेभ्यः। हिरिकेशेभ्य इति हिरि-केशेभ्यः। पृश्वनाम्। पत्ये। नमः। नमः। नमः। नमः। नमः। नमः। सस्पर्श्वराय। त्विषीमत् इति त्विषी-मृते। पृथीनाम्। पत्ये। नमः। नमः। ब्रुशायं। विव्याधिन् इति वि-व्याधिनै। अन्नांनाम्। पत्ये। नमः। नमः। नमः। हिरिकेशायित् हिरि-केशाय।

उपवीतिन् इत्युप-वीतिनैं। पृष्टानांम्। पतंये। नमंः। नमंः। भुवस्यं। हेत्यै। जगंताम्। पतंये। नमंः। नमंः। रुद्रायं। आतुताविन् इत्यां-तुताविनें। क्षेत्रांणाम्। पतंये। नमंः। नमंः। सूतायं। अहंन्त्याय। वनांनाम्। पतंये। नमंः। नमंः। (५) रोहिंताय। स्थपतंये। वृक्षाणांम्। पतंये। नमंः। नमंः। मन्त्रिणें। वाणिजायं। कक्षांणाम्। पतंये। नमंः। नमंः। भुवन्तये। वारिवस्कृतायेति वारिवः-कृतायं। ओषंधीनाम्। पत्ये। नर्मः। नर्मः। उच्चैर्घोषायेत्युचैः-घोषाय। आऋन्दयंत इत्याँ-ऋन्दयंते। पत्तीनाम्। पत्रये। नर्मः। नर्मः। कृथ्स्रवीतायेति कृथ्स-वीतायं। धावंते। सत्वंनाम्। पतंये। नर्मः॥ (६) नमंः। सहंमानाय। निव्याधिन इतिं नि-व्याधिनें। आव्याधिनीनामित्यां-व्याधिनीनाम्। पत्तेये। नमंः। नमंः। कुकुभायं। निष्क्षिण इति नि-सङ्गिनै। स्तेनानाम्। पत्ये। नमंः। नमंः। निषङ्गिण इतिं नि-सङ्गिनैं। इषुधिमत् इतींषुधि-मतें। तस्कराणाम्। पतंये। नमंः। नमंः। वश्चेते। परिवश्चेत इति परि-वश्चते। स्तायूनाम्। पत्ये। नर्मः। नर्मः। निचेरव इति नि-चेरवें। परिचरायेति परि-चरायं। अरंण्यानाम्।

पतंये। नमंः। नमंः। सृकाविभ्य इतिं सृकावि-भ्यः। जिघा रस्यः इति जिघा रसत्-भ्यः। मृष्णताम्। पत्ये। नमंः। नमंः। असिमद्भ इत्यंसिमत्-भ्यः। नक्तम्। चरद्भ इति चरत्-भ्यः। प्रकृन्तानामितिं प्र-कृन्तानाम्। पत्ये। नमंः। नमंः। उष्णीषिणे। गिरिचरायेतिं गिरि-चरायं। कुलुश्चानाम्। पत्ये। नमंः। पत्ये। नमंः। (७)

इषुंमद्भ इतीषुंमत्-भ्यः। धन्वाविभ्य इतिं धन्वावि-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। आतन्वानेभ्य इत्याँ-तन्वानेभ्यः। प्रतिदर्धानेभ्य इति प्रति-दर्धानेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। आयच्छंन्य इत्यायच्छंत्-भ्यः। विसृजन्य इति विसृजत्-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। अस्यंद्र्यं इत्यस्यंत्-भ्यः। विध्यंद्र्य इति विध्यंत्-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। आसीनेभ्यः। शयानेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। स्वपद्ध इति स्वपत्-भ्यः। जाग्रंद्र्य इति जाग्रंत्-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। तिष्ठंद्र्य इति तिष्ठंत्-भ्यः। धावंद्र्य इति धावंत्-भ्यः। च। वः। नर्मः। नमंः। सभाभ्यंः। सभापंतिभ्य इति सभापंति-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। अर्थ्वेभ्यः। अर्थ्वपतिभ्य इत्यर्श्वपति-भ्यः। च। वः। नर्मः॥ (८)

नमंः। आव्याधिनींभ्य इत्यां-व्याधिनींभ्यः। विविध्यंन्तीभ्य इति वि-विध्यन्तीभ्यः। च्। वः। नर्मः। नर्मः। उर्गणाभ्यः। तृ इतीभ्यंः। च। वः। नर्मः। नर्मः। गृथ्सेभ्यंः। गृथ्सपंतिभ्य इति गृथ्सपंति-भ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। व्रातेभ्यः। ब्रातंपतिभ्य इति ब्रातंपति-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। गुणेभ्यः। गुणपंतिभ्य इति गणपंति-भ्यः। च। वः। नर्मः। नमंः। विरूपेभ्य इति वि-रूपेभ्यः। विश्वरूपेभ्य इति विश्व-रूपेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। महन्च इति महत्-भ्यः। क्षुलकेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। र्थिभ्य इति र्थि-भ्यः। अर्थेभ्यः। च। वः। नर्मः। नर्मः। रथैभ्यः। (९)

रथंपितभ्य इति रथंपित-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। सेनाँभ्यः। सेनाँनिभ्य इति सेनानि-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। क्षत्तृभ्य इति क्षत्तु-भ्यः। सङ्गृहीतृभ्य इति सङ्गृहीतृ-भ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। तक्षेभ्य इति तक्षे-भ्यः। रथकारेभ्य इति रथ-कारेभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। नमंः। कुलांलेभ्यः। कुमिरैभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। चृश्विष्टेंभ्यः। निषादेभ्यः। च। वः। नमंः। नमंः। इषुकृद्ध इति धन्वकृत्भयः। धन्वकृद्ध इति धन्वकृत्भयः। च। वः। नमंः। नमंः। मृग्युभ्य इति मृग्यु-भ्यः। श्विनभ्यः।

इतिं श्वनि-भ्यः। च। वः। नमः। नमः। श्वभ्य इति श्व-भ्यः। श्वपंतिभ्य इति श्वपंति-भ्यः। च। वः। नमः॥ (१०)

नमंः। भ्वायं। च। रुद्रायं। च। नमंः। श्वायं। च। प्रशुपतंय इति पशु-पतंये। च। नमंः। नीलंग्रीवायेति नीलं-ग्रीवाय। च। शितिकण्ठायेति शिति-कण्ठांय। च। नमंः। कपिर्दिनै। च। व्युप्तकेशायेति व्युप्त-केशाय। च। नमंः। सहस्राक्षायेति सहस्र-अक्षायं। च। शत्यंन्वन इति शत-धन्वने। च। नमंः। गिरिशायं। च। शिपिविष्टायेति शिपि-विष्टायं। च। नमंः। मीदुष्टंमायेति मीदुः-तमाय। च। इष्मत इतीष्ं-मते। च। नमंः। हुस्वायं। च। वामनायं। च। नमंः। बृह्ते। च। वर्षीयसे। च। नमंः। वृद्धायं। च। संवृध्वंन इति सम्-वृध्वंने। च। (११)

नर्मः। अग्नियाय। च। प्रथमायं। च। नर्मः। आशवैं। च। अजिरायं। च। नर्मः। शीघ्रियाय। च। शीभ्याय। च। नर्मः। ऊर्म्याय। च। अवस्वन्यायेत्यंव-स्वन्याय। च। नर्मः। स्रोतस्याय। च। द्वीप्याय। च॥ (१२)

नर्मः। ज्येष्ठायं। च। कनिष्ठायं। च। नर्मः। पूर्वजायेतिं पूर्व-जायं। च। अपुरुजायेत्यंपर-जायं। च। नर्मः। मुध्यमायं। च्। अपगल्भायेत्यंप-गल्भायं। च्। नमंः। ज्रघन्यांय। च। बुध्नियाय। च। नमंः। सोभ्याय। च। प्रतिसर्यायिति प्रति-सर्याय। च। नमंः। याम्याय। च। क्षेम्याय। च। नमंः। उर्वर्याय। च। खल्याय। च। नमंः। श्लोक्याय। च। अवसान्यायेत्यंव-सान्याय। च। नमंः। वन्याय। च। कक्ष्याय। च। नमंः। श्रवायं। च। प्रतिश्रवायेति प्रति-श्रवायं। च। (१३)

नमंः। आशुषेणायेत्याशु-सेनाय। च। आशुरंथायेत्याशु-र्थाय। च। नर्मः। शूरांय। च। अवभिन्दत इत्यंव-भिन्दते। च। नर्मः। वर्मिणै। च। वरूथिनै। च। नमंः। बिल्मिनै। च। कविचेनै। च। नर्मः। श्रुतायं। च। श्रुत्सेनायेतिं श्रुत-सेनायं। च॥ (१४) नमः। दुन्दुभ्याय। च। आहन्नयायेत्यां-हन्नयाय। च। नमः। धृष्णवैं। च। प्रमृशायेतिं प्र-मृशायं। च। नमंः। दूतायं। च। प्रहितायति प्र-हिताय। च। नमः। निषङ्गिण इति नि-सङ्गिनै। च। इषुधिमत् इतींषुधि-मतें। च। नमंः। तीक्ष्णेषंव इतिं तीक्ष्ण-इषवे। च। आयुधिनैं। च। नर्मः। स्वायुधायेतिं सु-आयुधार्य। च। सुधन्वन इति सु-धन्वने। च। नर्मः। स्रुत्याय।

च। पथ्याय। च। नर्मः। काट्याय। च। नीप्याय। च। नर्मः। सूद्याय। च। सरस्याय। च। नर्मः। नाद्याय। च। वैशन्ताय। च। (१५)

नमंः। कूप्याय। च। अवट्याय। च। नमंः। वर्ष्याय। च। अव्ष्याय। च। नमंः। वर्ष्याय। च। विद्युत्यायिति वि-द्युत्याय। च। नमंः। ईप्रियाय। च। आतप्यायत्यां-तप्याय। च। नमंः। वात्याय। च। रेष्मियाय। च। नमंः। वास्तव्याय। च। वास्तुपायिति वास्तु-पायं। च॥ (१६)

नमः। सोमाय। च। रुद्रायं। च। नमः। ताम्रायं। च। अरुणायं। च। नमः। शङ्गायं। च। पशुपतंय इति पशु-पतंये। च। नमः। उग्रायं। च। भीमायं। च। नमः। अग्रेवधायेत्यंग्रे-वधायं। च। दूरेवधायेति दूरे-वधायं। च। नमः। हुन्ने। च। हनीयसे। च। नमः। वृक्षेभ्यः। हरिकेशेभ्य इति हरि-केशेभ्यः। नमः। तारायं। नमः। शम्भव इति शम्-भवें। च। मयोभव इति मयः-भवें। च। नमः। शङ्करायेति शम्-करायं। च। मयस्करायेति मयः-करायं। च। नमः। शिवायं। च। शिवतंरायेति शिव-तराय। च। (१७) नमंः। तीर्थ्याय। च। कूल्याय। च। नमंः। पार्याय। च। अवार्याय। च। नमंः। प्रतरंणायति प्र-तरंणाय। च। उत्तरंणायेत्युंत्-तरंणाय। च। नमंः। आतार्यायेत्याँ-तार्याय। च। आलाद्यायेत्याँ-लाद्याय। च। नमंः। शष्य्याय। च। फेन्याय। च। नमंः। सिक्त्याय। च। प्रवाह्यायेति प्र-वाह्याय। च॥ (१८)

नमंः। इिर्ण्याय। च। प्रप्थ्यायिति प्र-पृथ्याय। च। नमंः। किर्शिलायं। च। क्षयंणाय। च। नमंः। कपिर्दिनें। च। पुल्रस्तयें। च। नमंः। गोष्ठ्यायिति गो-स्थ्याय। च। गृह्याय। च। नमंः। तल्प्याय। च। गेह्याय। च। नमंः। काट्याय। च। गृह्याय। च। गृह्याय। च। गृह्याय। च। गृह्याय। च। नमंः। हृद्य्याय। च। निवेष्यायिति नि-वेष्य्याय। च। नमंः। पार्स्य्याय। च। र्जस्याय। च। नमंः। शुष्क्याय। च। हिर्त्याय। च। नमंः। लोप्याय। च। उल्प्याय। च। (१९)

नमंः। ऊर्व्याय। च्। सूर्म्याय। च। नमंः। पृण्याय। च। पृण्शृद्यायिति पर्ण-शृद्याय। च। नमंः। अपगुरमाणायेत्यप-गुरमाणाय। च। अभिघृत इत्यंभि-घृते। च। नमंः। आख्खिदत इत्याँ-खिद्ते। च। प्रिख्खद्त इति प्र-खिद्ते। च। नर्मः। वः। किरिकेभ्यः। देवानाँम्। हृदयेभ्यः। नर्मः। विक्षीणकेभ्य इति वि-क्षीणकेभ्यः। नर्मः। विचिन्वत्केभ्य इति वि-चिन्वत्केभ्यः। नर्मः। आनिर्हतेभ्य इत्यांनिः-हृतेभ्यः। नर्मः। आमीवत्केभ्यः इत्यां-मीवत्केभ्यः॥ (२०)

द्रापें। अन्धंसः। पृते। दरिंद्रत्। नीलंलोहितेति नीलं-लोहित्॥
एषाम्। पुरुषाणाम्। एषाम्। पृशूनाम्। मा। भेः। मा। अरः।
मो इतिं। एषाम्। किम्। चन। आममत्॥ या। ते। रुद्र।
शिवा। तृन्ः। शिवा। विश्वाहंभेषजीतिं विश्वाहं-भेषजी॥
शिवा। रुद्रस्यं। भेषजी। तयां। नः। मृड। जीवसें॥ इमाम्।
रुद्रायं। त्वसें। कप्रिंनें। क्षयद्वीरायेतिं क्षयत्-वीराय।
प्रेतिं। भरामहे। मृतिम्॥ यथां। नः। शम्। असंत्। द्विपद्
इतिं द्वि-पदें। चतुंष्पद् इति चतुंः-पृदे। विश्वम्ं। पुष्टम्।
ग्रामें। अस्मिन्। (२१)

अनांतुर्मित्यनां-तुर्म्॥ मृडा। नः। रुद्र। उत। नः। मयः। कृधि। क्षयद्वीरायेति क्षयत्-वीरायः। नमंसा। विधेमः। ते॥ यत्। शम्। च। योः। च। मनुः। आयज इत्यां-यजे। पिता। तत्। अश्यामः। तवं। रुद्र। प्रणींताविति प्र-नीतौ॥ मा। नः। महान्तम्। उता मा। नः। अर्भकम्। मा। नः। उक्षंन्तम्। उता मा। नः। उक्षितम्॥ मा। नः। वधीः। पितरम्। मा। उता मातरम्। प्रियाः। मा। नः। तुनुवंः। (२२)

रुद्र। रीरिषः॥ मा। नः। तोके। तनये। मा। नः। आयुंषि। मा। नः। गोषुं। मा। नः। अश्वंषु। रीरिषः॥ वीरान्। मा। नः। रुद्र। भामितः। वधीः। ह्विष्मंन्तः। नमसा। विधेम। ते॥ आरात्। ते। गोघ्र इतिं गो-घ्रे। उत। पूरुषघ्र इतिं पूरुष-घ्रे। क्षयद्वीरायेतिं क्षयत्-वीराय। सुम्नम्। अस्मे इतिं। ते। अस्तु॥ रक्षां। च। नः। अधीतिं। च। देव। ब्रूहि। अधां। च। नः। शर्म। यच्छ। द्विबर्हा इतिं द्वि-बर्हाः॥ स्तुहि। (२३)

श्रमा युच्छा । ढूबहा इ।त । ढू-बहाः॥ स्तु।हा (२३)
श्रुतम्। गूर्त्सद्मिति गर्त-सदम्। युवानम्। मृगम्। न।
भीमम्। उपहृत्नुम्। उग्रम्॥ मृडा। जरित्रे। रुद्र्। स्तवानः।
अन्यम्। ते। अस्मत्। नीति। वपन्तु। सेनाः॥ परीति।
नः। रुद्रस्य। हेतिः। वृण्कु। परीति। त्वेषस्य। दुर्मतिरिति
दुः-मृतिः। अघायोरित्यंघा-योः॥ अवेति। स्थिरा। मृघवंद्र्य
इति मृघवंत्-भ्यः। तुनुष्व। मीद्वः। तोकायं। तनयाय।
मृड्य॥ मीढुंष्ट्मेति मीढुंः-तुम्। शिवंतमेति शिवं-तुम्।
शिवः। नः। सुमना इति सु-मनाः। भूव॥ पुर्म। वृक्षे।

आयुंधम्। निधायेतिं नि-धायं। कृत्तिम्ं। वसानः। एतिं। चुर्। पिनांकम्। (२४)

बिभ्रंत्। एतिं। गृहि॥ विकिरिदेति वि-किरिद्र। विलोहितिति वि-लोहित। नमः। ते। अस्तु। भगव इति भग-वः॥ याः। ते। सहस्रम्। हेतयः। अन्यम्। अस्मत्। नीतिं। वपन्तु। ताः॥ सहस्राणि। सहस्रधेतिं सहस्र-धा। बाहुवोः। तवं। हेतयः॥ तासाम्। ईशानः। भगव इतिं भग-वः। प्राचीनां। मुखां। कृधि॥ (२५)

सहस्राणि। सहस्रुश इति सहस्र-शः। ये। रुद्राः। अधीति। भूम्याम्॥ तेषाम्। सहस्रुयोजन इति सहस्र-योजने। अविति। धन्वानि। तन्मसि॥ अस्मिन्। महिता अर्णवे। अन्तिरिक्षे। भवाः। अधि॥ नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। शितिकण्ठा इति शिति-कण्ठाः। शर्वाः। अधः। क्षमाचराः॥ नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। शितिकण्ठा इति शिति-कण्ठाः। दिवम्। रुद्राः। उपिन्नताः। शितिकण्ठा इति शिति-कण्ठाः। दिवम्। रुद्राः। उपिन्नताः इत्यपं-न्रिताः॥ ये। वृक्षेषुं। सस्पञ्जराः। नीलंग्रीवा इति नीलं-ग्रीवाः। विलोहिता इति वि-लोहिताः॥ ये। भूतानाम्। अधिपतय इत्यधि-पत्यः। विशिखास् इति वि-शिखासः। कपर्दिनंः॥ ये। अन्नेषु। विविध्यन्तीति वि-शिखासः। कपर्दिनंः॥ ये। अन्नेषु। विविध्यन्तीति वि-शिखासः। कपर्दिनंः॥ ये। अन्नेषु। विविध्यन्तीति वि-

विध्यंन्ति। पात्रेषु। पिबंतः। जनान्॥ ये। पथाम्। पथिरक्षंय इति पथि-रक्षयः। ऐलुबृदाः। यृव्युर्धः॥ ये। तीर्थानि। (२६) प्रचर्न्तीतिं प्र-चरन्ति। सृकावंन्त इतिं सृका-वन्तः। निषङ्गिण इति नि-सङ्गिनः॥ ये। एतावन्तः। च। भूयार्रसः। च। दिशः। रुद्राः। वितस्थिर इति वि-तस्थिरे॥ तेषाम्। सहस्रयोजन इतिं सहस्र-योजने। अवेतिं। धन्वांनि। तन्मसि॥ नर्मः। रुद्रेभ्यंः। ये। पृथिव्याम्। ये। अन्तरिक्षे। ये। दिवि। येषाँम्। अन्नम्। वातंः। वर्षम्। इषंवः। तेभ्यंः। दशं। प्राचीः। दशं। दक्षिणा। दशं। प्रतीचींः। दशं। उदींचीः। दशं। ऊर्ध्वाः। तेभ्यः। नर्मः। ते। नुः। मृडुयुन्तु। ते। यम्। द्विष्मः। यः। च। नः। द्वेष्टिं। तम्। वः। जम्भैं। दधामि॥ (२७)

त्र्यंम्बक्मिति त्रि-अम्बक्म्। यजामहे। सुगन्धिमिति सु-गन्धिम्। पुष्टिवर्धनमिति पुष्टि-वर्धनम्॥ उर्वारुकम्। इव। बन्धनात्। मृत्योः। मुक्षीय। मा। अमृतात्॥ यः। रुद्रः। अग्नौ। यः। अफ्स्वत्यंप्-सु। यः। ओषधीषु। यः। रुद्रः। विश्वा। भुवना। आविवेशेत्यां-विवेशं। तस्मैं। रुद्रायं। नमंः। अस्तु॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

This PDF was downloaded from http://stotrasamhita.github.io.

रुद्रपदपाठः 15

 ${\sf GitHub:} \quad {\sf http://stotrasamhita.github.io} \quad | \quad {\sf http://github.com/stotrasamhita}$ 

Credits: http://stotrasamhita.github.io/about/